साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

# शब्दम्

चरण८:२०११–१२

# शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

## उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

**सम्पर्क:**

शिकोहाबाद: शशिकांत पाण्डेय, अभिषेक श्रीवास्तव

शब्दम् , हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 205141. फोन: (05676)234501/503

ई–मेल: hindlamps@sify.com

मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई फोन - 022-22826187

www.shabdamhindi.com

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

# शब्दम्

चरण ८: २०११-१२


## शब्दम् न्यासी मंडल

### अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

### उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक

श्री उदय प्रताप सिंह

(कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

### वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

## विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

डॉ.ओमप्रकाश सिंह

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

श्री मंजर उल वासै

श्री मुकेश मणिकांचन

डॉ. रजनी यादव

### सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

### समन्वय

शशिकांत पाण्डेय • अभिषेक श्रीवास्तव • आशा जोशी

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

# अनुक्रम


अध्यक्षीय निवेदन ..... 3

## सांस्कृतिक-कार्यक्रम

गीता का व्यावहारिक दर्शन ..... 5
गीता प्रश्न मंच ..... 6
राम नवमी ..... 7
भजन-भक्ति ..... 8
राजस्थानी लोकनृत्य एवं गायन ..... 10
सितार एवं तबला वादन ..... 13
बांसुरी वादन ..... 15
'रुदाली' प्रयास, न्यूज़ीलैंड का स्तुत्य प्रयास ..... 18
धरोहर-2012 ..... 20

## वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

शिक्षक दिवस ..... 21
संस्कृति सप्ताह ..... 25
ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन ..... 26
विद्यार्थियों का सम्मान ..... 28
कवि सम्मेलन ..... 29

## सतत स्थायी कार्यक्रम

शब्दम् सिलाई केन्द्र ..... 31
'शब्दम्' ग्रामीण बालिका पाठशाला ..... 32
हिन्दी प्रश्न मंच ..... 33
जनपदस्तरीय हिन्दी प्रश्न मंच ..... 36

## विविधा

विलक्षण हस्तशिल्प कला के धनी चक्रेश - जैन ..... 38
हिन्दी सेवी सम्मान ..... 39
सम्मान समाचार ..... 43
शुभकामना संदेश ..... 44

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित
शब्दम्

# अध्यक्षीय निवेदन

असमिया के युवा कवि सौरभ सैकिया की कविता ''सौरभ का मृत्यु–संवाद'' से मैं अपनी बात शुरू करना चाहती हूँ–

''बैठे रहने के कारण
मृत्यु हुई है
एक फूल में बैठकर
हिलते रहने के कारण
सौरभ की मुत्यु हुई है
भौंरे को उड़ा देने के कारण,
इन्द्रधनुष चुराने के कारण
इंच–इंच आसमान की जंग में
सौरभ की मृत्यु हुई है
सौरभ मरा है
अकेले ऊपरी हिस्से में
घूमते रहने के कारण
अनजान आततायी के हाथों
सौरभ मारा गया है
उज्जवल वीराने के एक टुकड़े में
सौरभ की मृत्यु हुई है''

इस कविता को कई संदर्भों में देखा जा सकता है। लेकिन इसका सबसे गहरा आशय भू–मंडलीकरण के दौर में मनुष्य का अपनी सांस्कृतिक परंपरा से कटकर दिखावे और क्षणिक सौन्दर्यलोक में डूबकर आत्महन्ता

स्थितियों तक अपने को ले जाने की उस यथार्थरहित भावबोध में है, जो निरन्तर हमारे जीवन का शोक–संदेश लिख रहा है। यह शोक–सन्देश, इस कविता के मृत्यु आलेख का उत्तरवर्ती प्रस्ताव है, जिसे हमने ही जाने–अनजाने स्वीकार कर लिया है।

इस स्वीकार से सबसे अधिक नुकसान हमारी भाषिक अस्मिता को हुआ है। भाषिक अस्मिता के सांस्कृतिक पुनरोत्थान की कोशिश ही हमें इस विषम परिस्थितियों से निकालकार पुनः जातीय संस्कृति और प्रकृति के उन सर्जनात्मक तत्वों से जोड़ सकती है, जिसका दिल दहला देने वाला अभाव किसी युवा कवि को आज के मनुष्य का मृत्यु –आलेख लिखने को विवश कर देता है।

आज मुझे आप यह साधिकार कहने दें कि 'शब्दम्' ने भूमण्डलीकरण के इस लकदक

यथार्थरहित सौन्दर्यलोक से अपने को अलग रखते हुए अपनी जातीय और भाषिक अस्मिता को, लोक–परंपरा को, आध्यात्मिक भावबोध की नैसर्गिक संलग्नता को, भारतीय भाषाओं की अखंडित परस्पर सहअस्तित्व–मूलक रागात्मक निष्ठा को एक सांस्कृतिक और प्राकृतिक आंदोलन के रूप में खड़ा कर दिया है, जिसकी गूंज नवजागरण काल के सांस्कृतिक उन्मेष का नया संस्करण बन गयी है। जिसमें पुनरोत्थान से आगे बढ़कर नवोत्थान की आशा का नितान्त ठेठ भारतीय सौन्दर्य आलोक जगमगा रहा है।

भारतीय नैतिकता और मूल्यबोध को शब्द, संस्कार और सत्य के त्रिआयामी पाठ में रूपान्तरित करने का काम 'शब्दम्' ने किया है। रूपान्तरण की इस प्रक्रिया में शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्यों का अथक प्रयास वंदनीय है। उसे शब्दों में बांधना उतना ही कठिन है जितना नदी की समावेशी सघनता और वेग–प्रवाह को रोकना।

रोला बार्थ ने कहीं लिखा है– ''साहित्य ऐसी जागरूकता है, जो भाषा के पास भाषा होने के कारण है।'' आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और भाषा दोनों उत्तर आधुनिक भाषिक विमर्श की डुगडुगी में खतरे में पड गई हैं। शब्दम् उसी जागरूक अभियान का नाम है, जो ''हमारी भाषा को हमारे पास होने के'' दायित्वबोध को बड़ी सहजता से संकल्पबोध में तब्दील कर देता है। आप सबकी सामूहिक सहभागिता, सम्बल और क्रियाशीलता इस बात का प्रमाण है कि हम सही दिशा में अग्रसर हैं।

पत्रिका का आठवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। 'शब्दम्' के दायित्वबोध और संकल्प शक्ति का वार्षिक पुनर्पाठ। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया हमारा सम्बल बनेगी। हमारा मार्गदर्शन करेगी, इसी आशा के साथ!

करण बजाज

**यह सच है कि कोई भी नदी अपने स्त्रोत से ऊपर नहीं उठ सकती, वैसे ही कोई भी राष्ट्रीय साहित्य उन लोगों की सामाजिक अवस्था के नैतिक स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता जो उसके प्रेरणा स्त्रोत हैं।**

# गीता का व्यावहारिक दर्शन

- **कार्यक्रम विषयः** गीता का व्यावहारिक दर्शन
- **दिनांकः** 7 दिसम्बर 2011 • **स्थानः** प्रहलाद राय टिकमानी इण्टर कालेज
- **उपस्थित अतिथिः** शिवपूजन शुक्ल, दीन मुहम्मद दीन, सलाहकार मण्डल के सदस्य, लेखनी के प्रशान्त उपाध्याय, कृपा शंकर शर्मा शूल, रविन्द्र पाल सिंह चौहान, डॉ. चन्द्रवीर जैन आदि।

इस वर्ष प्रथम बार शब्दम् एवं साहित्यिक संस्था 'लेखनी' द्वारा श्रीमदभगवत गीता की जयन्ती का आयोजन किया गया, कार्यक्रम प्रहलाद राय टिकमानी विद्यालय में आयोजित किया गया। गीता के व्यावहारिक दर्शन पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने कहा कि विश्व में गीता एक मात्र ग्रन्थ है जिसकी जयन्ती मनायी जाती है। विषय प्रवर्तन करते हुए मंजर–उल–वासै ने कहा कि यदि निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाए तो निष्कर्ष निकलता है कि गीता किसी धर्म विशेष का ग्रन्थ नहीं है वरन गीता मानव मात्र को सन्मार्ग दिखाकर उसके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने गीता महत्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए गीता के उन तत्वों को रेखांकित किया जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं।

कवि शिवपूजन शुक्ल ने गीता के व्यावहारिक दर्शन पर छात्र–छात्राओं से संवाद करते हुए कहा कि गीता के कर्म का उपदेश सभी के लिए नितान्त उपयोगी है और उस उपदेश को जीवन में अपनाने से व्यक्ति को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। छात्र जीवन से लेकर गृहस्थ जीवन तक व्यक्ति गीता के बताए हुए मार्ग पर चले तो सभी समस्याएं समाप्त हो जाऐंगी।

अध्यक्षता करते हुए डॉ. ओ.पी. सिंह ने कहा कि कर्म का संदेश देती है गीता और हम उसी पर विश्वास करते हैं और उसी के आधार पर कार्य करते हैं कि 'कर्म किए जाओ और फल की इच्छा न करो' और इसी को मैंने अपने जीवन में उतारा है। मैं यहाँ उपस्थित शिक्षक और छात्रों को संदेश दूंगा कि इसको अपने जीवन में उतारें।

कवि दीन मुहम्मद दीन ने अपनी कुछ रचनाऐं पढ़ीं।

कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षकगण उपस्थित थे। कार्यक्रम में छात्रों ने विद्वान व्यक्तियों से जीवन में आने वाली कठिनाइयों से सम्बन्धित प्रश्न भी किए। कार्यक्रम का संचालन मुकेश मणिकान्चन ने किया।

गीता पर व्याख्यान देते डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया

# श्रीमद्भगवत गीता को जानिए

- **कार्यक्रम विषयः** गीता प्रश्न मंच
- **दिनांकः** 9 अगस्त 2012 • **संयोजनः** 'शब्दम्'
- **आमंत्रित अतिथिः** श्रीमती किरण बजाज, सलाहकार मण्डल के सदस्य– डा. ओ.पी. सिंह, श्री मंजर–उल–वासै, डॉ. महेश आलोक, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया एवं डॉ. रजनी यादव।

'श्रीमद्भगवद गीता को जानिए' प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में सलाहकार मण्डल के सदस्य डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने गीता के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछे।

छात्र–छात्राओं ने गीता के संदर्भ में अपने ज्ञानवर्द्धक उत्तर देकर बुद्धि एवं ज्ञान की कसौटी पर खरा उतरने का प्रयास किया। सही उत्तर देने वाले छात्रों को शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने भगवतगीता एवं लेखनी देकर सम्मानित किया। बच्चों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि गीता हमें जीवन की कला सिखाती है। गीता के प्रश्न जीवन की कठिनाइयों को दूर करते हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने निष्काम कर्मयोग का संदेश दिया है। गीता वर्तमान में जीना सीखने के साथ हताशा एवं निराशा दूर करती है। आचार्य विनोबा भावे द्वारा लिखे गये गीता प्रवचन का अनुवाद विश्व की चालीस भाषाओं में हुआ है। आज छात्र गीता के संदेशों को पढ़कर एवं जानकर ज्ञान अर्जित कर जीवन का लक्ष्य पूरा करें।

अपने विचार रखते हुए श्री उमाशंकर शर्मा ने कहा कि गीता का मूल मंत्र ईश्वर की प्राप्ति के लिए बुद्धि का प्रयोग करना है। बिना बुद्धि के जीवन में कुछ भी नहीं है।

डॉ. ओ.पी. सिंह ने कहा कि गीता कोई धार्मिक ग्रन्थ न होकर ईश्वर प्राप्ति के साथ निष्काम भाव से कर्म करने को प्रेरित करती है।

गीता प्रश्न मंच का माल्यार्पण कर शुभारम्भ करतीं श्रीमती बजाज व डॉ. ओ.पी. सिंह

गीता हमें कर्म करना सिखाती

'गीता को जानिए' प्रतियोगिता आयोजित

पालीवाल महाविद्यालय में हुआ आयोजन

# राम नवमी

रामनाम से सजा वाहन

स्वरूप के साथ भक्तगण

झांकी में बैठे राम, भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न के स्वरूप

झांकी के साथ भक्तगण

**श्री रामचन्द्र कृपालु भजमन हरण भवभय दारुणम्**
**नवकंज लोचन, कंज मुख, कर कंज,**
**पद कंजारुणम्**
**कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम्**
**पट पीत मानहुं तड़ित रुचि सुचि नौमी जनक सुतावरम्**

# 'मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है'

- **कार्यक्रम विषयः** भजन–भक्ति
- **दिनांकः** 13 अक्टूबर 2012 • **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **स्थानः** संस्कृति भवन, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद
- आमंत्रित अतिथिः श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

कार्यक्रम का प्रारम्भ 'ठाकुरजी' द्वारा गुनगुनाये गये प्रसिद्ध भजन 'मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा है' के साथ हुआ। इस भजन ने प्रारम्भ से ही संस्कृति भवन सभागार में उपस्थित श्रोताओं को कृष्ण भक्ति के अमृत रस में डूबने को विवश कर दिया।

ठाकुरजी ने मनुष्य को कर्म का महत्व बताते हुए कहा कि ''हमें अपना कर्म करते रहना चाहिए, साथ में भगवान को याद करते रहना चाहिए। यदि आप केवल भगवान को याद करेंगे और कोई कर्म नहीं करेंगे तो भगवान को यह मान्य नहीं है।'' इस प्रसंग के दौरान अपनी बात समझाने के लिए उन्होंने भजन 'सुख में भूलो मति, दुःख में तड़पो मति, प्राण जाएं मगर नाम भूलो मति' सुनाया।

उन्होंने कहा कि हम परमात्मा के साथ कोई भी सम्बन्ध जोड़ सकते हैं परन्तु वह सम्बन्ध सच्चा

भक्तों को भगवान की भक्ति के तरीके बताते श्रीकृष्णचन्दजी शास्त्री 'ठाकुर जी'

होना चाहिए। इस प्रसंग पर उन्होंने मीरा बाई, प्रहलाद, विभीषण एवं अन्य भक्तों के उदाहरण दिए।

उन्होंने कहा 'भक्ति में तीन तत्व होते हैं (1) विश्वास करो (2) सम्बन्ध स्थापित करो (3) समर्पित हो जाओ। ईश्वर के प्रति प्रेम का साधनात्मक स्वरूप है भक्ति। भक्ति का अर्थ होता है जुड़ना और विभक्ति का अर्थ होता है अलग होना। सांसारिक सम्बन्धों का अतिक्रमण करके जब हम ईश्वर से जुड़ते हैं जहाँ हमारा अपना निजी स्वार्थ नहीं होता, हमारा हृदय परमार्थ के बारे में सोचने लगता है, वही भक्ति है। परमार्थ का आत्यन्तिक भाव निःस्वार्थ प्रेम से है और प्रेम का परम स्वरूप भक्ति है अर्थात समर्पण'।

ठाकुरजी से प्रश्न पूछते हुए श्रीमती बजाज ने कहा कि हर तरफ इतनी भागवत होती है, फिर भी झूठ का बोलबाला क्यों हैं?

ठाकुरजी ने उत्तर दिया कि लोग जो कहते हैं, सुनते हैं उस पर अमल नहीं करते। मंदिर जाना भी तभी सार्थक है जब सत्य बोलो। सत्य ही भगवान है, सत्य को नकारोगे तो सफलता नहीं मिलेगी।

भजन प्रस्तुत करते मथुरा के कलाकार

ठाकुरजी ने कहा कि 24 घण्टे में एक बार आत्मा से सत्य का अनुभव होता है, सत्य का सही रूप दिखाना धर्म है। गीता के उपदेश को अमल करें तो कल्याण होगा।

ठाकुरजी के साथ आए मथुरा के कलाकारों द्वारा सुनाए गये भजन ''जहाँ विराजे राधा रानी मेरी अलबेली सरकार,'' ''दूर नगरी बड़ी दूर नगरी'', ''मेरा दिल तो दीवाना हो गया मुरली वाले तेरा'', मैं तो तेरी दीवानी हो गयी'' सुनकर श्रोतागण झूमते रहे और भक्तिरस में डुबकी लगाते हुए अपने वर्तमान जीवन की सार्थकता को कृष्ण को समर्पित करके भावविभोर होते रहे।

भजन करते भक्तजन

ठाकुरजी का स्वागत करतीं श्रीमती किरण बजाज

# केसरिया बालम पधारो म्हारे देश

- **कार्यक्रम विषयः** केसरिया बालम पधारो म्हारे देश
- **दिनांकः** 24 अप्रैल 2012 • **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **आमंत्रित कलाकारः** खेटा खान व उनके साथी
- **आमंत्रित अतिथिः** शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्य, डा. आर.के. सिंह, डा दीपाली अग्रवाल, डा. एस.के . एस. चौहान।

भारतीय लोक संस्कृति को आगे बढ़ाने में कार्यरत संस्था स्पिक मैके के सहयोग से हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन में राजस्थानी लोकनृत्य एवं गायन का आयोजन किया गया।

राजस्थान के जेसलमेर की मंगलियार जाति (जो राजपूत राजाओं के लिए गाने बजाने का कार्य करती थी) से सम्बन्ध रखने वाले खेटा खान व उनके साथियों ने राजस्थानी लोक संगीत को राजस्थान की सीमा के आगे देश के बाहर न्यूजीलैंड, यू.के., कनाडा तक पहुंचा दिया है। लोक गीतों को मात्र ग्रामगीत कहकर उनकी व्यापकता को कम नहीं किया जा सकता।

श्री खेटा खान ने अपनी कला व शास्त्रीय गायन के बीच के अन्तर को स्पष्ट करते हुए बताया कि शास्त्रीय गायन के लोग सुर व राग को गिन कर गाते हैं जबकि हम केवल गाने को दिमाग में रखते हैं और गाते व वाद्य यन्त्र बजाते हैं।

अपनी कला का प्रदर्शन खेटा खान द्वारा गणेश वन्दना ''महाराज गजानन आओ री, मौरी सभा में रंग बरसाओ री'' के साथ किया।

राजपूतों में केसरिया रंग की महत्ता को बताते हुए ''केसरिया बालम पधारो म्हारो देश'' की धुन छेड़ी

राजस्थानी लोक नृत्य प्रस्तुत करते खेटा खान एवं साथी

तो दर्शक ताली बजाने से अपने को रोक न सके।

खेटा खान द्वारा जब कामयचा वाद्ययन्त्र की धुन को तबले की धुन के साथ मिलाया गया तो सुनने वाले झूम उठे और तालियों को लय के साथ मिलाने लगे।

एक के बाद एक लोक गीत ''झूमा रे, झूमा रे, ढोलन मजारो मारो लूमा रे, लूमा रे झूमा रे झूमा रे.' लोगों की फरमाइश पर प्रसिद्ध फिल्मी लोक गीत 'निबुड़ा–निबुड़ा', 'दमादम मस्त कलन्दर' सुनकर श्रोतागण झूमते रहे।

वाद्ययंत्रों की थाप एवं उनसे निकलती धुन पर राजस्थान की प्रसिद्ध कालबेलिया लोकनृत्य की मनमोहक प्रस्तुति ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। नृत्यांगना ने अपनी आंखों के माध्यम से जमीन से अंगूठी उठाने की अदभुत कला का हैरतअंगेज नजारा पेश किया।

खेटाखान एवं उनके समूह के साथियों चनन खान, बरकत खान, कचरा खान, शेर खान, कुकला खान, शेर नाथ एवं लीला ने नृत्य एवं गायन की अद्भुत एवं मंत्रमुग्ध करने वाली प्रस्तुति दी ।

ज्ञानदीप स्कूल, ब्राइट स्कालर्स स्कूल, लार्ड कृष्णा स्कूल के कला संगीत में रुचि लेने वाले बच्चों ने भी कार्यक्रम का आनन्द उठाया।

लोक नृत्य की धुन पर नृत्य करती नृत्यांगना

लोक संगीत एवं नृत्य का आनंद लेते श्रोतागण व स्कूली बच्चे

## खेटा खान लांगा

राजस्थान के बाड़मेर, जेसलमेर आदि जिलों में अपने शास्त्रीय लोक संगीत के लिए प्रसिद्ध मंगनियार एवं खेटा मुस्लिम समुदाय के लोग हैं। राजस्थान के राजपूत राजाओं एवं जमीदारों के यहाँ होने वाले जन्म, विवाह या किसी भी पारिवारिक उत्सव में लोक गायन करते हैं। राजपूत राजा या जमीदार ही इन लोक गायकों के संरक्षक हैं। इनकी गायन शैली में हिन्दू देवताओं, कृष्ण, दुर्गा इत्यादि की प्रशंसा की गयी है।

खेटा खान की विगत कई पीढ़ियाँ राजस्थानी लोक गायन एवं नृत्य कर रही हैं। स्पिक मैके से जुड़े होने के कारण भारत सहित कई देशों में अपनी कला बिखेरते रहे हैं।

केसरिया बालम पधारो म्हारे देश

छाप तिलक सब छीनी
मोसे नैना मिलाय के...

स्पिक मैके और शब्दम का कार्यक्रम

केसरिया बालम पधारो म्हारो देश

**खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार।**
**जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।।**

**खुसरो सरीर सराय है क्यों सोवे सुख चैन।**
**कूच नगारा सांस का बाजत है दिन रैन।।**

# जब दीप जले आना

- **कार्यक्रम विषयः** सितार एवं तबला वादन
- **दिनांकः** 8 मई 2012 • **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **आमंत्रित कलाकारः** पं. शुभेन्द्र राव एवं श्री शैलेन्द्र मिश्र
- **आमंत्रित अतिथिः** शब्दम् सलाहकार मंडल के सदस्य, डॉ. धर्मेन्द्र नाथ, श्री रघुवर दयाल गुप्ता, श्री एस.के. सिंह वर्मा।

शब्दम् और स्पिक मैके के संयुक्त तत्वावधान में हिंद परिसर स्थित संस्कृति भवन में सितार व तबला वादन कार्यक्रम 'जब दीप जले आना' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध सितार वादक पं. रविशंकर के शिष्य पं. शुभेन्द्र राव ने सितार पर अपनी प्रस्तुति दी। श्री शैलेन्द्र मिश्र ने उनके साथ तबले पर संगत की। सितार और तबले से निकले मधुर राग में उपस्थित श्रोतागण पूरी तरह से शास्त्रीय संगीत के रस में डूब गए।

पं. शुभेन्द्र राव ने 'पूरिया कल्याण' राग के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके बाद कई रागों को मिलाकर पं. राव व श्री मिश्र ने एक साथ सितार व तबले पर जुगलबंदी की। श्रोताओं ने भारतीय शास्त्रीय संगीत का भरपूर आनंद उठाया और तालियों की गड़गड़ाहट से कलाकारों का खूब उत्साह वर्धन किया। अंत में बापू के पसंदीदा भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' की मधुर धुन ने तो मानो श्रोताओं को मन ही मन भक्ति रस में झूमने पर मजबूर कर दिया।

सितार की धुन छेड़ते श्री शुभेन्द्र राव। तबले पर संगत देते साथी कलाकार

राग पूरिया–कल्याण दो रागों पूरिया और कल्याण को मिलाकर पूरिया–कल्याण राग बना है। पूरिया–कल्याण राग वह राग है जिसे सूर्यास्त के बाद बजाया जाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात है एक ही समय में दो अलग–अलग रागों को साथ में बजाते हुए दोनों की लय बरकरार रखना। शास्त्रीय संगीत में एक विशेष तथ्य है कि कुछ राग ऐसे हैं जिनको बजाने का समय निर्धारित है।

इसके बाद शब्दम् सलाहकार मंडल द्वारा कलाकारों को शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया। डा. महेश आलोक ने कलाकारों का परिचय

सितार की धुन का आनंद लेते श्रोतागण

'जब दीप जले आना जब शाम ढले...'

ब्राइट स्कालर्स एकेडमी में भी हुआ कार्यक्रम

सितार और तबले की जमी जुगलबंदी

सितार की तान से झंकृत हुआ संस्कृति भवन

### कलाकारों का संक्षिप्त परिचयः

**पं. शुभेन्द्र राव** का जन्म सन् 1964 में मैसूर में हुआ। उनके पिता श्री एन. आर. रामाराव पं. रविशंकर के शिष्य थे और उनकी माता भी सरस्वती वीणा वादन करती हैं। श्री राव ने संगीत की तालीम पं. रविशंकर के संरक्षण में पाई। पं. राव ने 1984 को दिल्ली में अपना पहला कार्यक्रम और 1987 में बंगलुरू में अपने पहले एकल कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। पं. राव भारत ही नहीं वरन् विश्व के कई देशों में जैसे कन्सर्ट हाल ब्राडवे, कारनेगी हाल न्यूयार्क, वोमैड उत्सव गुर्नसे (यूके), नेशनल आर्ट्स उत्सव दक्षिण अफ्रीका, थियेटर डी ली विले पेरिस में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं। पं. राव को 2007 में ज़ी टीवी द्वारा यूथ आइकान फॉर क्लासिकल म्यूजिक के पारितोषिक से सम्मानित भी किया जा चुका है।

तबले पर संगत कर रहे **श्री शैलेन्द्र मिश्र** बनारस और फर्रूखाबाद घरानों से ताल्लुक रखते हैं। इन्हें ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के 'ए' ग्रेड कलाकार का दर्जा प्राप्त है। श्री मिश्र भी भारत और अन्य देशों में अपने कई कार्यक्रमों की प्रस्तुति दे चुके हैं।

# तोरे बिना मोहें चैन नहीं
# बृज के नंदलाला

- **कार्यक्रम विषयः** बांसुरी वादन
- **दिनांकः** 9 अगस्त 2012 • **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **आमंत्रित कलाकारः** पं. राजेन्द्र प्रसन्ना एवं साथी कलाकार
- **आमंत्रित अतिथिः** शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्य, विशिष्टि अतिथि – श्री देवीचरण अग्रवाल, एन.सी.सी. के कमाडिंग आफिसर श्री तेवतिया, डा. सुकेश यादव, डा. आर.वी. सिंह, श्री आर.ए. कुशवाहा, डा. रत्नेश कुलश्रेष्ठ, श्री जतिन आहूजा, डॉ. चन्द्रवीर जैन, डॉ. विनीता सक्सेना, डा. नेहा कुलश्रेष्ठ आदि।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर शब्दम् एवं स्पिक मैके के संयुक्त तत्वावधान में हिन्द परिसर स्थित संस्कृति भवन सभागार में बांसुरी वादन का आयोजन किया गया।

बनारस घराने के बांसुरी एवं शहनाई वादक पं. राजेन्द्र प्रसन्ना एवं साथी कलाकारों (श्री शुभ महाराज एवं जनाब शहज़ाद रशीद) द्वारा बांसुरी वादन की प्रस्तुति की गयी। पंडित राजेन्द्र प्रसन्ना ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बांसुरी वादन के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान निर्मित की है। पंडित जी ऐसे पहले बांसुरी एवं शहनाई वादक हैं जो बँटवारे के बाद पहली बार पाकिस्तान में कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं। पंडित जी बांसुरी वादक पं रविशंकर के साथ भी कार्यक्रम कर चुके हैं।

पंडित जी ने राग यमन से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। फिर राग किरवाली, मियाँ मल्हार से

पं. राजेन्द्र प्रसन्ना साथी कलाकारों के साथ

उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। पंडित जी द्वारा गाये गये भजन ''तोरे बिना मोहें चैन नहीं ब्रज के नंदलाला'', ''श्याम बजाए मुरलिया, रास रचाएं गोपियां, जन्म लियो ब्रज में लाला'', ''हरि गुन गावे दिल श्याम रंग–रंग गई'', ''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो'', ''तुलसा मगन भयी हरि गुन गा कर', 'राजा चले हाथी घोड़ा, पालकी सजा के, साधु चले भुइयां–भुइयां चींटी बचाके'' ने श्रोताओं को झूमने पर विवश कर दिया।

तबला पर संगत कर रहे प्रसिद्ध तबला वादक श्री शुभ महाराज के साथ की गयी उनकी जुगलबन्दी पर संस्कृति भवन सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

श्री प्रसन्ना ने श्रोताओं के आग्रह पर बनारसी दादरा व राग भैरवी भी सुनाया।

कार्यक्रम में शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने कहा कि ''बांसुरी में मन और लोगों को बांधने की असीम शक्ति है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इतने बड़े कलाकार को अपने बीच पाकर शब्दम् खुद को धन्य अनुभव कर रहा है।'' उन्होंने स्पिक मैके को धन्यवाद दिया कि जिनके प्रयास से संस्था ऐसे कार्यक्रम कराने में सफल रहती है।

इस अवसर पर आमंत्रित कलाकारों को शब्दम् की ओर से हस्तनिर्मित बाँस की बाँसुरी भेंट की गयी। पंडितजी ने बताया कि हम देश विदेश बहुत सी जगह गये परन्तु किसी ने ऐसा उपहार नहीं दिया।

शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्य डॉ. महेश आलोक ने शब्दम् एवं पं. राजेन्द्र प्रसन्ना का परिचय प्रस्तुत किया।

संस्कृति भवन मुख्य द्वार पर प्रसंशकों एवं शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्यों के साथ पं. राजेन्द्र प्रसन्ना एवं उनके साथी कलाकार

## पं. राजेन्द्र प्रसन्ना

पंडितजी का जन्म 15 अप्रैल 1956 में हुआ। बाँसुरी वादन की सौगात अपने बाबा पं. गौरी शंकर एवं पिता पं. रघुनाथ प्रसन्ना से प्राप्त हुई। ठुमरी सम्राट पं. महादेव प्रसाद मिश्रा, ''उस्ताद हफीज अहमद खान और ''उस्ताद शरफ़राज हुसैन खान का सान्निद्ध भी मिला। पंडित जी ने बहुत छोटी उम्र से बांसुरी वादन पर अपनी पकड़ बना ली थी। 12 वर्ष की उम्र में उन्हें कलकत्ता में आयोजित संगीत सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया गया। वह ऐसे प्रथम बांसुरी एवं शहनाई वादक हैं जिन्हें बटवारे के बाद 1986 में पाकिस्तान में संगीत सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया गया।

## सम्मान

1978 में 'सुरमनी', 1986 में 'संगीत पुजारी', 1994 में 'नादरन्ता', 1998 में 'संगीत सुरभ'। वर्ष 2003 में सहारा इण्डिया परिवार ने "Life Time Achievement Award" सम्मानित किया। 1993 में महर्षि महेश योगी द्वारा आयोजित 'महर्षि संगीत उत्सव' में आपने फ्रांस, हालैण्ड, लैबनान और साइप्रस में भाग लिया। भारतीय स्वतंत्रता के स्वर्ण जयन्ती उत्सव पर अमेरिका, कनाडा और स्विटजरलैण्ड में आयोजित 'विश्व संगीत महोत्सव' में शिरकत। 2006 में जापान में आयोजित "Festival of India" का प्रारम्भ आपकी शहनाई के साथ।

**भगवान कृष्ण जिस बांसुरी की धुन से गोपियों और पशु–पक्षियों को तरंगित कर देते थे, उसका उपयोग आज की जीवनशैली से उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिए किया जा रहा है। इसे 'बांसुरी–योग' के रूप में जाना जाता है। यह पारंपरिक योग का मिलाजुला रूप है। इस पद्धति में बांसुरी की धुन पर श्वास नियंत्रण का अभ्यास किया जाता हैं।**

# 'रुदाली'

## प्रयास का स्तुत्य प्रयास

प्रयास न्यूज़ीलैंड में एक स्वयंसेवी थिएटर (रंगमंच) ग्रुप है जो व्यापक दर्शक वर्ग के लिए इंग्लिश में मूल भारतीय थिएटर की रचना कर रहा है। बीतते सालों के साथ शब्दम ने दूर दराज की जगह में भारतीय थिएटर की महान विरासत को फैलाने के उनके प्रयत्नों को सहयोग देने के लिए उनके साथ भागीदारी की है।

वर्ष की शुरूआत में, उन्होंने महाश्वेता देवी की प्रसिद्ध लघु कथा रुदाली–द मोर्नर–पर आधारित नाटक का मंचन किया। प्रयास ने मूल कथा के निहित विषय और संदेश के साथ छेड़खानी किए बिना नाटक प्रस्तुत किया। लेकिन मनोरंजक और दिललुभावन तरीके से एक गंभीर मुद्दा उठाया और महान पारम्परिक लोक संगीत एवं नृत्य पेश किया।

इसके विशाल पात्रों में 25 अभिनेताओं ने भाग लिया जिसमें विभिन्न जातियों के कई पेशेवर और प्रशिक्षित अभिनेता थे। बल्कि सनिचरी की मुख्य भूमिका पैट्रिशिया द्वारा निभाई गई जो साउथ पेसिफिक के छोटे से द्वीप, कुक आईलैंड की निवासी हैं।

चार लोगों का लाइव बैंड पेशेवर और सामुदायिक कलाकारों का मिश्रण था– जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का एक स्थानीय वॉयलिनिस्ट, एक वोकलिस्ट– जो पेशे से डॉक्टर है और एक प्रशिक्षित शास्त्रीय गायिका शामिल थे।

निर्देशक दल को सह निर्देशन और सहयोग में

व्यावसायिक सहयोग का सहारा मिला हुआ था।

सुदीप्ता व्यास ने नाटक का निर्माण किया और मार्केटिंग एवं विज्ञापन की जिम्मेदारी संभाली। रुदाली के कुल सात शो चले जिनमें से दो शो हाउस फुल थे।

रुदाली को मुख्य स्थानीय मीडिया से अतिप्रशंसनीय समीक्षा मिली और दर्शकों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली। सफलता के आधार पर उनको अक्तूबर २०१३ में ऑकलैंड के मुख्य थिएटर स्थलों में से एक – हेराल्ड थिएटर में मंचन के लिए आमंत्रित किया गया है, यह न्यूज़ीलैंड पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित ऑकलैंड दिवाली फेस्टिवल के साथ ही नियोजित किया गया है।

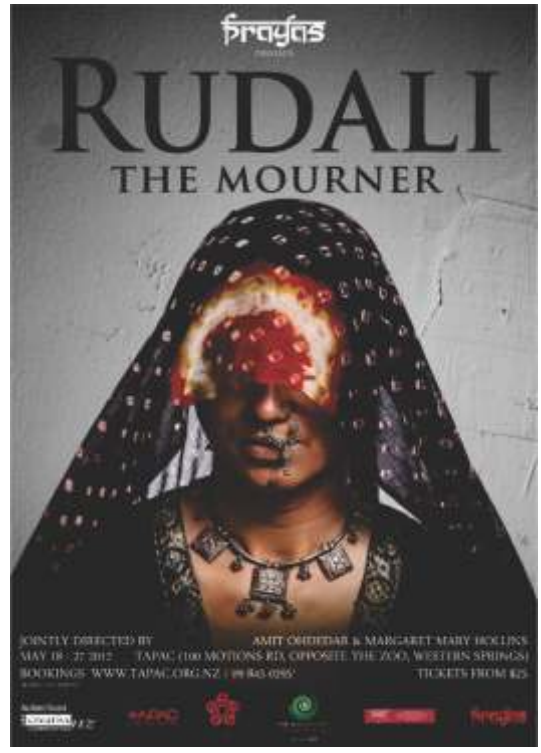

# धरोहर–2012

## धरोहर–2012 में शब्दम् की सहभागिता

जी.बी. पन्त विश्वविद्यालय, पन्त नगर, उत्तराखण्ड स्पिक मैके चैप्टर ने राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृति उत्सव धरोहर 2012 का आयोजन 16 से 18 फरवरी 2012 को किया। इस सांस्कृतिक उत्सव में विश्वविद्यालय के लगभग 3000 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस उत्सव में विद्यार्थियों के सांस्कृतिक, शैक्षणिक, संगीत, गायन, नृत्य इत्यादि से सम्बन्धित प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र श्री शशांक शेखर सिंह (हनी) की पहल पर शब्दम् अध्यक्ष ने विद्यार्थियों को शब्दम् से जोड़ने के लिए इस कार्यक्रम में आर्थिक सहयोग दिया।

धरोहर–2012 के अन्तर्गत शब्दम् एवं अन्य प्रायोजकों के साथ छात्र–छात्राओं के मध्य सांस्कृतिक एवं संगीत कला के कार्यक्रम आयोजित किए गये, जिसमें बढ़चढ़कर छात्र छात्राओं ने भाग लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कुलसचिव तथा स्पिक मैके ने शब्दम् को उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद दिया।

# समालोचना के शिखर पुरुष नामवर का सम्मान

- **कार्यक्रम विषयः** शिक्षक दिवस
- **दिनांकः** 5 सितम्बर 2012 • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित अतिथिः** प्रो. नामवर सिंह, श्री उदय प्रताप सिंह
- **विशिष्ट अतिथिः** डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी एन जौहर, शब्दम सलाहकार मंडल के सदस्य उमाशंकर शर्मा, मंजर उलवासै, डॉ. ओ.पी. सिंह, डॉ. महेश आलोक, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डॉ. रजनी यादव, श्री मुकेश मणिकान्चन, डॉ. मनोज रावत (प्राचार्य आगरा कालेज, आगरा), डॉ. टी आर चौहान (प्राचार्य आर.बी.एस. कालेज, आगरा), डॉ. मौकम सिह यादव (प्राचार्य के.के. कालेज, इटावा), डॉ. उदयवीर सिंह (प्राचार्य जे.एल.एन. कालेज एटा), डॉ. बी. के. अग्रवाल (प्राचार्य मैनपुरी नेशनल कालेज), डा कान्ता श्रीवास्तव (प्राचार्य बी.डी.एम. कालेज, शिकोहाबाद), श्री चक्रेश जैन, श्री बालकृष्णगुप्त, डा सुमनलता द्विवेदी (प्राचार्य नवोदय विद्यालय)सहित प्रबुद्ध महानुभाव।

शब्दम की ओर से शिक्षक दिवस पर हिन्द लैम्प्स स्थित संस्कृति भवन सभागार में गरिमामय एवं भव्य समारोह में हिन्दी समालोचना के शिखर पुरुष नामवर सिंह का सम्मान किया गया ।

प्रो. नामवर सिंह को वैजयन्ती माला, नारियल, अंगवस्त्रम, शाल, सम्मान पत्र; सम्मान राशि देकर शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज, प्रो. नन्दलाल पाठक, श्री उदयप्रताप सिंह एवं शब्दम सलाहकार मंडल के सदस्यगण ने सम्मानित किया।

प्रो. नन्दलाल पाठक एवं श्री उदयप्रताप सिंह को भी श्रीमती किरण बजाज एवं सलाहकार मंडल के सदस्यों ने वैजयन्ती माला शाल एवं नारियल भेंट कर सम्मानित किया। सम्मान सुमधुर मंगल गीत "शुभ मंगल हो शुभ मंगल हो; शुभ मंगल मंगल मंगल हो" के गायन के साथ दिया गया।

प्रो. नामवर सिंह का परिचय देते हुए डा. ओ. पी. सिंह ने कहा कि "किसी भी महान व्यक्तित्व के निर्माण के लिए माता –पिता से मिले संस्कार, स्कूली शिक्षा के दौरान अच्छे शिक्षक एवं सहपाठी तथा स्वयं की इच्छा शक्ति एवं विश्वास का होना

प्रो. नामवर सिंह के हस्तनिर्मित चित्र का लोकार्पण

अतिआवश्यक है और यह संयोग की बात है कि नामवर सिंह को यह सब चीजें प्राप्त हैं। "उन्होंनें उनके बचपन के दिनों की याद ताजा की ।

प्रो. नामवर सिंह के शिष्य डॉ. महेश आलोक ने शब्दम का परिचय दिया। उन्होंनें नामवर सिंह के बारे में संस्मरण सुनाते हुए कहा कि "नामवर सिंह अपने छात्रों के भीतर अपने से बड़े आलोचकों से टकराने का साहस पैदा करते हैं और अपने छात्रों को समझाते हैं कि "अविवेकपूर्ण सहमति से विवेकपूर्ण असहमति अत्यधिक महत्वपूर्ण है।"

मुम्बई से पधारे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में नामवर सिंह के सहपाठी रहे, मुम्बई विश्वविद्यालय के निवर्तमान हिन्दी प्राध्यापक प्रो. नन्दलाल पाठक ने इस अवसर पर अपने अतीत की मधुर स्मृतियों का स्मरण किया। प्रो. पाठक ने शिक्षक दिवस पर गुरु –शिष्य सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए कहा कि "जैसे रामकृष्ण परमहंस को विवेकानन्द मिले वैसे ही आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को नामवर।"

मुख्य अतिथि प्रो. नामवर सिंह ने "समालोचक की सामाजिक–सांस्कृतिक भूमिका" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत कर समालोचना कर्म को जो स्पष्ट रूप दिया वह समीक्षा जगत की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी। नामवर सिंह ने अपने वक्तव्य में एक गहन विचारक, महान शिक्षक एवं आदर्श समीक्षक का परिचय दिया। साहित्य में कविता की महत्ता को रेखांकित करते हुए प्रो सिंह ने उसकी रसात्मक भूमिका की ओर संकेत किया ।

उन्होंनें कहा कि आलोचक एक दुभाषिए की तरह होता है। उसका काम रचना को उस 'वेवलेंथ' तक ले जाकर पाठक से जोड़ना है जहां रचनाकार पहुंचना चाहता है या जहाँ तक जाकर रचनाकार ने सोच और संवेदना के स्तर पर अपनी

दांये से डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डॉ. महेश आलोक, प्रो. नामवर सिंह, श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती किरण बजाज, प्रो. नंदलाल पाठक

सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त किया है इसके बाद आलोचक की भूमिका समाप्त हो जाती है ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभी–अभी उ.प्र. हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष का कार्यभार संभालने वाले प्रतिष्ठित कवि एवं पूर्व सांसद श्री उदयप्रताप सिंह ने कहा कि नामवर सिंह को सुनना इसलिए एक अद्वितीय अनुभव है कि क्योंकि वह हर बार अपने आलोचकीय वक्तव्य में कुछ ऐसा नया जोड़ देते हैं जो इसके पहले नहीं सुना गया।"

स्वागत भाषण प्रस्तुत करतीं श्रीमती किरण बजाज

श्रीमती बजाज को शुभआशीष देते प्रो. नामवर सिंह

प्रो. नामवर सिंह को सम्मान प्त्र देते बांये से डॉ. महेश आलोक, डॉ. ओ.पी. सिंह, श्रीमती किरण बजाज, श्री मंजर उलवासै



अपने विचार व्यक्त करते प्रो. नामवर सिंह

# साहित्य की पुरानी जड़े राजस्थान में

## प्रो. नामवर सिंह की पत्रकार वार्ता

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद। हिंद परिसर स्थित कल्पतरू भवन में पत्रकारों से वार्ता के दौरान हिंदी समालोचना के शिखर पुरुष प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि हमारे साहित्य की पुरानी जड़े राजस्थान में हैं। ढोलामारू, सौरठिया सब वहीं की देन हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा का बहुत विकास हुआ है। हिंदी में बहुत प्रतिभाशाली छात्र इस क्षेत्र में हैं। लेखिकाओं की कहानी व उपन्यास लेखन में संख्या अच्छी है।

प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि संस्कृत भाषा हिंदी की मां है। संस्कृत के बहुत से शब्द हिंदी में हैं। हिंदी में तत्सम शब्द अधिक हैं। उन्होंने कहा कि दलित साहित्य में ... ज्यादा हैं, लेकिन यही ...

प्रो. नामवर सिंह।

तक की सरकार का हिंदी की ओर ध्यान था उसके बाद अन्य कारणों से हिंदी की ओर ध्यान नहीं दिया गया। शब्दम् की अध्यक्ष किरण बजाज ने कहा कि उनका मानना है कि शिक्षक आदमी, समाज, देश, संसार सब कुछ गढ़ता है। शिक्षक को अपनी भूमिका के प्रति हमेशा सजग रहना होगा। प्रो. नंदलाल पाठक ने कहा कि भाषा हमेशा ... की चीज है। मुस्कान ...



गुरुजन के आशीर्वाद से बदल गयी जीवन ...

आलोचक दुभाषिया होता है: प्रो. नामवर

## प्रो. नामवर सिंह

डा. नामवर सिंह का जन्म 1 मई 1927 को वाराणसी जिले के जीयनपुर नामक गाँव में हुआ । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आपने हिन्दी में एम.ए एवं पी.एच.डी. की।

**अध्यापन:** जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में भारतीय भाषा केन्द्र के संस्थापक अध्यक्ष तथा हिन्दी प्रोफेसर एवं प्रोफेसर एमेरिटस। महात्मा गॉधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति।

**सम्पादन:** 'आलोचना' त्रैमासिक के प्रधान सम्पादक। 'जनयुग' साप्ताहिक (1965–67)

**सम्मान:** साहित्य अकादमी पुरस्कार 1971, हिन्दी अकादमी दिल्ली का 'शलाका सम्मान' (1991), राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान के अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का "साहित्य भूषण सम्मान''।

**कृतियां:** बकलम खुद, पृथ्वीराज रासो की भाषा, आधुनिक साहित्य की प्रवृतियां, छायावाद, इतिहास और आलोचना, कविता के नये प्रतिमान, दूसरी परम्परा की खोज, वाद विवाद संवाद, चिंतामणि भाग–3 (संपादन), रामचन्द्र शुक्ल संचयन इत्यादि।

# संस्कृति सप्ताह

संस्कृति सप्ताह के अन्तर्गत विद्यालयों –महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के मध्य निबन्ध लेखन काव्य पाठ, गद्यवाचन, इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें राज कॉन्वेंट, ज्ञानदीप, गार्डेनिया पब्लिक स्कूल, न्यूगार्डेनिया पब्लिक स्कूल, एशियन पब्लिक स्कूल, प्रहलाद राय टिकमानी विद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

संस्कृति सप्ताह मनाने का उद्देश्य है अपनी संस्कृति से बच्चों को अवगत कराना।

समूह में काव्य पाठ करतीं स्कूली छात्राएं

काव्य पाठ करती स्कूली छात्रा

कार्यक्रम में उपस्थित राज कॉनवेंट स्कूल के बच्चे

# तो आज हमें आजाद हिंदुस्तान नहीं मिलता

- **कार्यक्रम विषयः** ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन
- **दिनांकः** 1 जुलाई 2012 • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** श्री ओमप्रकाश उपाध्याय 'मधुर', श्री जयेंद्र पाण्डेय 'लल्ला', श्री श्रीकांत सिंह, कुमारी योगेश चौहान

**विशिष्ट अतिथिः** शब्दम सलाहकार मंडल के सदस्य, डा.एस.के. सिंह चौहान, डॉ. आर.बी. सिंह।

ग्रामीण जन भारतीय समाज का केंद्र होने के साथ ही वास्तविक भारत के परिचायक भी हैं'–राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा कई वर्ष पूर्व किया गया यह अवलोकन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उस समय था। भारतीय समाज के केंद्र इन्हीं ग्रामवासियों को भारतीय संस्कृति और साहित्य से जोड़े रखने के लिए 'शब्दम्' द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस वर्ष पांचवां ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन फिरोजाबाद जिले के अंतर्गत जसराना में महादेव मंदिर के पास स्थित बगिया में आयोजित किया गया। भयंकर गर्मी और जला देने वाली लू के थपेड़ों के बावजूद साहित्य और कविता प्रेमी ग्रामीणों ने उत्साह से लबरेज रहते हुए कार्यक्रम

कविता पाठ करते डॉ. राजेन्द्र यादव

का भरपूर आनन्द उठाया।

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि ओमप्रकाश उपाध्याय 'मधुर' ने की और अपने लोकगीतों के माध्यम से लोगों को वाह–वाह करने पर मजबूर कर दिया। डा. राजेन्द्र यादव (मिलावली), जयेंद्र पाण्डेय 'लल्ला' (मैनपुरी), श्रीकांत सिंह (लखीमपुर खीरी) और नवोदित कवयित्री कुमारी योगेश चौहान (एटा) ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों का न सिर्फ मनोरंजन किया बल्कि समाज में फैली विभिन्न बुराइयों जैसे कन्या भ्रूण हत्या, किसानों की समस्याओं आदि के प्रति जागरूकता का संदेश दिया।

डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने कवि सम्मेलन का संचालन करते हुए वीर रस की अपनी कविता 'तो आज हमें आजाद हिंदुस्तान नहीं मिलता' के माध्यम से श्रोताओं में जोश का संचार किया। जसराना के स्थानीय कवियों खलील गुमनाम, अशोक अनजाना और दुर्ग विजय सिंह ने भी काव्य पाठ किया। श्रोताओं ने भी साहित्य प्रेमी होने का परिचय देते हुए खूब तालियां बजाईं।

शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने मुंबई से

काव्यरस पान करते श्रोता

दूरभाष के माध्यम से लोगों को संदेश दिया। श्रीमती बजाज ने कहा कि ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन के आयोजन के पीछे मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति लोगों के मन में प्रेम जगाना है। श्रीमती बजाज ने अधिक से अधिक संख्या में लोगों को हिंदी के उत्थान के लिए कार्य करने की सलाह दी।

शब्दम् उपाध्यक्ष तथा वरिष्ठ कवि प्रो. नन्दलाल पाठक ने दूरभाष से दिए संदेश में अपनी ग़ज़ल 'नभ रहे नीला धरा धानी रहे, सांस ले सकने में आसानी रहे' के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश दिया।

कविताओं से मंत्रमुग्ध हुए श्रोता

बिजली बोली मौज में हूं, दिखूं कैसे कन्नौज में हूं...

तो आज हमें आजाद हिंदुस्तान नहीं मिलता...

# विद्यार्थियों का सम्मान

- **कार्यक्रम विषयः** एम.ए. स्नातकोत्तर हिन्दी में अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान
- **दिनांकः** 13 जुलाई 2012 • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** मंजर–उल–वासै, मुकेश मणिकान्चन, ओमप्रकाश बेवरिया, सुरेन्द्र सौरभ, कृपाशंकर शर्मा,
- **आमंत्रित अतिथिः** डॉ. निर्मला यादव, प्राचार्य महात्मा गांधी महाविद्यालय, फिरोजाबाद

संस्था द्वारा पालीवाल महाविद्यालय के सहयोग से इस वर्ष एम.ए. स्नातकोत्तर हिन्दी में जिला स्तर पर अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयाजित किया गया।

इस अवसर पर नारायण महाविद्यालय की एम.ए प्रथम वर्ष की छात्रा नूतन को हिन्दी में 82 प्रतिशत, एस.आर.के कालेज के छात्र कृष्ण कुमार यादव को 72 प्रतिशत तथा राजकीय महिला महाविद्यालय की छात्रा पुष्पा गुप्ता को 70 प्रतिशत अंक अर्जित करने पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सम्मानित विद्यार्थियों को उचित शिक्षा प्रदान करने के लिए उनके प्राचार्यों और हिन्दी के विभागाध्यक्ष क्रमशः डा. आर.के. पालीवाल, डॉ. महेश आलोक (नारायण महाविद्यालय, शिकोहाबाद), डॉ. विपिन कुमार, डॉ. अतुल तिवारी (एस.आर.के. फिरोजाबाद), डॉ. भगवत स्वरूप (सिरसागंज) को शब्दम् स्मृति चिन्ह और शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली कु. नूतन, श्री कृष्ण कुमार यादव व कु. पुष्पा को सम्मान पत्र भेंट करते डॉ. ओ.पी. सिंह व डॉ. निर्मला यादव

# मेरा रंग दे बसंती चोला

- **कार्यक्रम विषयः** कवि सम्मेलन
- **दिनांकः** 29 जनवरी 2012
- **आमंत्रित कविगणः** मंजर–उल–वासै, मुकेश मणिकान्चन, ओमप्रकाश बेवरिया, सुरेन्द्र सौरभ, कृपाशंकर शर्मा, प्रशान्त उपाध्याय, गिरीश जैन, कप्तान सिंह 'संघर्षी', रविन्द्र रंजन, विवेक विश्वास, अनिल बेधड़क, डॉ.एम.ए. खान, ब्रह्मानन्द झा, निर्दोष कुमार 'प्रेमी' ।

बसंत पंचमी। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्थानीय कवियों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इन कवियों की रचनाओं को सुनकर लगा कि अगर इन्हें उचित अवसर और मंच मिलें तो कम से कम हिन्दी की मंचीय कविता के शोर–शराबे से भरे चरित्र में कविता की आत्यंतिक उपस्थिति अवश्य सुनिश्चित की जा सकती है।

ब्रह्मानन्द झा की कविता 'मेरा रंग दे बंसती चोला' की पंक्तियों ''कौन कहता है कि मैं शहीद हुआ हूँ, चोला बसन्ती ओढ़कर हमीद हुआ हूँ'' , ''रंग लो चोला बसंती देश की वीरांगनाओं, हाथ में मेंहदी नहीं तलवार होनी चाहिए'' ने श्रोताओं में जोश भर दिया।

रवीन्द्र रंजन की कविता ''भावों के फूल खिलें जब मेरी कविता में, मेरे गीत स्वंय बासन्ती गन्ध

काव्यपाठ करते श्री विवेक विश्वास

सुनाएंगे'' जैसी पंक्तियों से ऐसा लगा जैसे कि बंसत स्वंय इन कवियों की अगवानी में साक्षात् आकर खड़ा हो गया है।

निर्दोष कुमार 'प्रेमी' के ब्रज भाषा में लिखे दोहे ''उचकि–उचकि नचत मयूर, बाँध पंसरी पाँव। नैनन में कजरा दये, बसंत आयो गाँव'' ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

प्रशान्त उपाध्याय की ओज भरी रचना ''पत्थर–पत्थर दहक रहा है काश्मीर की घाटी का, विस्फोटों से हाल बुरा है मुम्बई की चौपाटी का।'' ''ईलू–ईलू छोड़ छाड़कर जाप करो बम भोले का, गीत हमें लिखना ही होगा आज बसन्ती चोले का'' ने जहाँ सामाजिक सांस्कृतिक क्रांति का उद्घोष किया, वहीं अरविन्द तिवारी ने अपनी पंक्तियों –''हो बसंती यामिनी और कोई कामिनी, रूप का जब दम्भ छोड़े तो समझ लो बदचलन हैं दिन निगोड़े, नैन से जब नेह को धोय–निचोड़े, तो समझ लो बदचलन हैं दिन निगोड़े''से श्रोताओं की रसात्मक संवेदना को देर तक काव्य रस में डूबने–उतराने के लिए मजबूर कर दिया।

## मेरा रंग दे बसन्ती चोला

कौन कहता है कि मैं शहीद हुआ हूँ,
चोला बसन्ती ओढ़कर हमीद हुआ हूँ,
ममता, स्नेह, बिछुए, राखी से पूछ लो
माँ के गले मिलकर मैं ईद हुआ हूँ,
रक्त का सिन्दूर भर सीमा की माँग में
इस वतन के वास्ते रसीद हुआ हूँ
गाँधी, सुभाष, शेखर, ऊधम के देश में
ओढ़कर चादर निरंगी नींद हुआ हूँ
कौन कहता है कि मैं शहीद हुआ हूँ
नयन कोरों में नहीं जलधार होनी चाहिए
और ना चूनर तुम्हारी तार होनी चाहिए
रंग लो चोला बसंती देश की वीरांगनाओं,
हाथ में मेंहदी नहीं तलवार होनी चाहिए
कौन कहता है कि मैं शहीद हुआ हूँ।

– ब्रह्मानंद झा
शम्भूनगर, शिकोहाबाद

मंचासीन कविगण

# शब्दम् सिलाई केन्द्र

ग्रामीण बालिकाओं एवं महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से हिन्द परिसर में शब्दम् सिलाई केन्द्र संचालित है, जिसमें आस–पास के ग्रामीण अंचल से बालिकाएं एवं महिलाएं सिलाई कला के शिक्षण के लिए आती हैं। इन्हें मासिक, त्रैमासिक, छमाही एवं वार्षिक प्रशिक्षण दिया जाता है। सिलाई केन्द्र का उद्देश्य है कि महिलाएं अपने हुनर, कौशल को विकसित करें तथा इस कला में पारंगत होकर स्वंय को, परिवार को, समाज को उन्नत बनाएं।

इसके साथ ही साथ गाँव में भी तीन माह का सिलाई प्रशिक्षण शिविर चलाया जाता है, जिसमें न्यूनतम शुल्क पर इस कला का प्रसार किया जाता है।

संस्था द्वारा प्रतिवर्ष 300 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है।

''समाज में स्थिरता, मजबूती एवं सांमजस्य का होना मुख्यत: महिलाओं पर निर्भर करता है।''

– श्री श्री रविशंकर

# 'शब्दम्' ग्रामीण बालिका पाठशाला

साहित्य, संगीत और कला को समर्पित संस्था 'शब्दम्' की ओर से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से ग्रामीण बालिका पाठशाला की शुरूआत की गई है। इस पाठशाला में उन ग्रामीण बालिकाओं, महिलाओं को शिक्षित किया जाएगा जो कभी स्कूल नहीं गईं या जिन्हें किसी कारणवश अपनी पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ी। इस विद्यालय में सभी को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। इस पाठशाला को शुरू करने में शब्दम् का उद्देश्य हर नारी को शिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाना है। पाठशाला में आने वाली प्रत्येक छात्रा को संस्था की ओर से निःशुल्क शिक्षण सामग्री जैसे स्लेट, चॉक, कॉपी, पेन्सिल और किताबें इत्यादि वितरित की जाती हैं।

पाठशाला में छात्राओं को प्रारम्भिक शिक्षा के तौर पर हिंदी स्वर, व्यंजन का ज्ञान, लिखना–पढ़ना, शब्द ज्ञान, वाक्य ज्ञान, सुलेख, पत्र लेखन

कविता पाठ करती बालिका

सिखाया जाता है। इसी प्रकार गणित में अंकों की पहचान, गिनती, पहाड़ा, जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग की शिक्षा दी जाती है। अंग्रेजी की वर्णमाला लिखना और पढ़ना, अंग्रेजी के अंकों की पहचान करना आदि की शिक्षा भी दी जाती है।

ग्रामीण बालिकाओं के साथ श्रीमती बजाज

ग्रामीण पाठशाला में शिक्षण प्राप्त करती बालिकाएं

# हिन्दी प्रश्न मंच

## विद्यार्थियों में हिन्दी के व्यवहारिक ज्ञान एवं जिज्ञासा को मौलिक रूप से जागृत करने की अनूठी विधा

शब्दम् के अन्य सभी कार्यक्रमों की भांति 'हिन्दी प्रश्न मंच' भी स्तरीय कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम लोकप्रिय होने के साथ, छात्र–छात्राओं के लिए व्यावहारिक रूप से लाभप्रद भी है। हिन्दी प्रश्नमंच के प्रत्येक कार्यक्रम में 30 से लेकर 50 ऐसे प्रश्नोत्तर सम्मिलित होते हैं जो हिन्दी भाषा, हिन्दी व्याकरण, हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों आदि से संबन्धित हैं। ये प्रश्न कक्षा 6 से एम.ए. तक के छात्र–छात्राओं के ज्ञान एवं मानसिक स्तर के अनुकूल निर्मित किये गये हैं–अप्रत्यक्ष रूप से इस बात को स्वीकार करते हुए कि उन्हें इन प्रश्नों को जानना चाहिए क्योंकि ये प्रश्न उनकी ज्ञानात्मक संवेदना के अनुकूल हैं। प्रश्नों का सही उत्तर देने पर प्रतिभागी को 'शब्दम्' की ओर से प्रतीकात्मक पुरस्कार दिया जाता है और सही उत्तर न देने की दशा में उन्हें सही उत्तर बताये जाते हैं। दोनों ही दशाओं में प्रतिभागी लाभान्वित होते हैं।

समीक्ष्य वर्ष में फ़ीरोज़ाबाद जनपद में ऐसे सफल कार्यक्रम महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय–फिरोजाबाद, संत जनूबाबा स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय–माण्डई, शिवओम पब्लिक स्कूल–जसराना, इंदिरा गांधी स्मारक विद्यालय–सिरसागंज, राष्ट्रीय सेवा योजना 10 दिवसीय शिविर, श्रीमती शांति देवी गर्ल्स कालेज फॉर ऐजुकेशन–शिकोहाबाद, अमरदीप महाविद्यालय–फिरोजाबाद, ब्रजराज सिंह संस्थान –कुबेरपुर आदि में आयोजित किये गये।

प्रश्न का जवाब देती छात्रा

'शब्दम्' ने ऐसे कार्यक्रम फीरोजाबाद जनपद से बाहर भी आयोजित किये जिनमें विशेष उल्लेखनीय हैं श्रीमती रामश्री महिला महाविद्यालय–एटा, जवाहर नवोदय विद्यालय –एटा, अपैक्स पब्लिक हाईस्कूल–एटा, वीरांगना अवंतीबाई महिला महाविद्यालय–एटा, कृष्ण माखन पब्लिक स्कूल वृन्दावन, कान्हा माखन पब्लिक स्कूल–मथुरा, महात्मा गांधी इण्टर कालेज–चकाथल (जो अलीगढ़ जनपद के सुदूर ग्रामीण अंचल में स्थित है), आर. सी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय–मैनपुरी। इस प्रकार यह कार्यक्रम फीरोजाबाद जनपद के बाहर एटा, मैनपुरी, अलीगढ़ और मथुरा जनपदों में भी पहुंचा।

विभिन्न स्तरों के अनुसार विभिन्न विद्यालयों में पूछे गये कुछ प्रश्नों की बानगी प्रस्तुत है:

- हिन्दी वर्णमाला में कितने स्वर होते हैं? (उत्तर–11)
- वर्णमाला के संयुक्त व्यंजनों के नाम बताइए? (उत्तर–क्ष, त्र, ज्ञ)
- 'तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सौर' लोकोक्ति का अर्थ बताइए। (उत्तर–अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना)
- कादम्बिनी का अर्थ बताइए। (उत्तर–कालीघटा अर्थात मेघमाला)

प्रश्नों का सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को लेखनी भेंट करते डॉ. राजेन्द्र सिंह

स्वागत गीत प्रस्तुत करती हुई शान्ति देवी आहूजा गर्ल्स बी.एड. कालेज की छात्राएं

छात्रों से प्रश्न पूछते श्री मंजर उल वासै

छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछते श्री मंजर उल वासै



## प्रतियोगिता में दिखाई प्रतिभा

शिकोहाबाद। साहित्य व संगीत व कला को समर्पित संस्था शब्दम द्वारा संत जनू बाबा स्मारक में हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के बीएड के 52 छात्र छात्राओं ने भाग लिया। प्रश्न का सही उत्तर देने वाले छात्र छात्राओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ शब्दम सलाहकार समिति के मंजर उलवासै व महाविद्यालय के निदेशक डा. बृजेश बाबू गर्ग, सचिव राम कैलाश यादव व प्राचार्य जयदेव सिंह ने मां ... के चित्र पर माल्यार्पण व ... किया।



## प्रतियोगिता में अव्वल रहे छात्र पुरस्कृत



## छात्रों ने मनवाया प्रतिभा का लोहा

### संस्था शब्दम द्वारा आयोजित की गई प्रतियोगिता



प्रश्न का जवाब देने के लिए हाथ खड़ा करते छात्र

प्रश्नों को ध्यान से सुनते छात्र–छात्राएं

# जनपदस्तरीय हिन्दी प्रश्न मंच

- **कार्यक्रम का नामः** जनपदस्तरीय हिन्दी प्रश्न मंच
- **दिनांकः** 25 फरवरी 2012 ● **स्थानः** पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद
- **आमंत्रित विद्यालय–महाविद्यालयः** पालीवाल महाविद्यालय, नारायण महाविद्यालय, आदर्श कृष्ण महाविद्यालय,
- ब्रजराज सिंह महाविद्यालय, महात्मा गॉधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजकीय कन्या महाविद्यालय, शान्ति देवी आहूजा कन्या महाविद्यालय, अमरदीप महाविद्यालय। जवाहर नवोदय विद्यालय, ब्राइटस्कालर्स एकेडमी, संत जनू बाबा इण्टर कालेज, पाली इण्टर कालेज, न्यूगार्डेनिया पब्लिक स्कूल, राज कॉनवेंट पब्लिक स्कूल, मधु माहेश्वरी सरस्वती बालिका उ0मा0 विद्यामन्दिर, ब्रजराजसिंह इण्टर कालेज।

भारतीय संस्कृति से युवाओं को जोड़ने के उद्देश्य से शब्दम् द्वारा आयोजित प्रश्न मंच के दायरे को नया रूप देते हुये 25 फरवरी 2012 को जिले के जिन विद्यालयों–महाविद्यालयों में प्रश्न मंच आयोजित किये जा चुके हैं उनके मध्य जिलास्तरीय प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को दो स्तर में बांटा गया। प्रथम पाली में इण्टरमीडियट स्तर व द्वितीय पाली में स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर तक के छात्र–छात्राओं को प्रथम व द्वितीय वर्ग में बांटा गया। दलों के नाम हिन्दी साहित्य के कहानीकारों, उपन्यासकारों के नाम पर रखा गये थे जैसे– कबीरदास,

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कालेज के छात्र/छात्राएं। पीछे बैठे जनपदस्तरीय प्रश्नमंच के संयोजक एवं पालीवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ओ.पी. सिंह एवं शब्दम् सलाहकार मण्डल के सदस्य

तुलसीदास, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त आदि।

इस प्रतियोगिता के लिए प्रश्नमंच संयोजक श्री मंजर उल वासै ने नये प्रश्नों का संग्रह किया, ऐसे प्रश्न जो अभी तक की प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं में नहीं पूछे गये थे।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को शब्दम् द्वारा प्रमाण पत्र, लेखनी एवं हिन्दी शब्दकोश भेंट किया गया। साथ ही प्रतियोगिता में प्रथम आने वाले विद्यालय–महाविद्यालय को 'चल वैजयन्ती' पुरस्कार के रूप में प्रदान की गयी (नियमतः तीन वर्ष तक लगातार कोई विद्यालय –महाविद्यालय यह प्रतियोगिता जीत लेता है तो चल वैजयन्ती पर हमेशा के लिए उस विद्यालय –महाविद्यालय का अधिकार हो जाएगा)। इण्टरमीडिएट के स्तर पर नवोदय विद्यालय, गुरैयासोयलपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्नातक–स्नातकोत्तर स्तर पर प्रतियोगिता बहुत ही रोचक मोड पर पहुँची जब नारायण महाविद्यालय एवं पालीवाल महाविद्यालय, दोनों को बराबर अंक प्राप्त हुए। अन्ततः निर्णायक मण्डल ने निर्णय लिया कि 'चल वैजयन्ती' छः–छः माह के लिए दोनों महाविद्यालयों को प्रदान की जाए।

डा. महेश आलोक द्वारा पूछे गये प्रश्न का जवाब देता पालीवाल महाविद्यालय का छात्र

डॉ. ओ.पी. सिंह ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रतियोगिता को पालीवाल महाविद्यालय में कराने का उद्देश्य बच्चों को अनुशासन का पाठ पढ़ाना भी था।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री मंजर उलवासै एवं डॉ0 महेश आलोक ने किया।

दिनांक 13 जुलाई 2012 को नारायण महाविद्यालय द्वारा चल वैजयन्ती जीते जाने के छः माह पूरे होने पर पालीवाल महाविद्यालय में एक कार्यक्रम आयोजित कर 'चल वैजयन्ती' नारायण महाविद्यालय से पालीवाल महाविद्यालय को हस्तान्तरित कर दी गयी।

# विलक्षण हस्तशिल्प कला के धनी चक्रेश जैन

– महेश आलोक

प्रख्यात हस्त शिल्पकार चक्रेश जैन विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। राधा– कृष्ण और राधेश्याम कृष्ण की 22 कैरेट की सोने की बारीक पच्चीकारी से किया गया उनका काम इतना चर्चित हुआ कि वे रातों– रात राष्ट्रीय स्तर पर हस्त शिल्पकारों की कलात्मक दुनिया के अग्रणी शिल्पकार के रूप में पहचाने जाने लगे। कांच, सोना और बारीक चित्रकारी का अद्‌भुत समन्वय उनकी हस्तशिल्प कला की विशेषता है, जिसे शब्दों में बांधना कठिन है। उसे उनके चित्रों को देखकर महज अनुभव किया जा सकता है। उनके व्यक्तित्व की सहजता और सरलता का रचनात्मक रूपान्तरण उनकी हस्तशिल्प कला में भी हुआ है। और इस अर्थ में कला और व्यक्तित्व के संवेदनात्मक संवाद से निखरी उनकी हस्तशिल्प कृतियां इस क्षेत्र की दुर्लभ धरोहर बन गयी हैं।

चक्रेश जैन की हस्तशिल्प कला का वैचारिक स्तर पर एक अलग तरह का सांस्कृतिक सौन्दर्यशास्त्र है, जो परंपरा एवं ठेठ भारतीय आधुनिकता के रसात्मक समन्वय से निर्मित हुआ है। उनके हस्तशिल्प में आकारों की उपस्थिति और अंगरागी दृष्टि, प्रेम, उत्साह ,उल्लास तथा जीवन की लय से संपृक्त भावबोध इतना निर्मल और आह्लादकारी है कि हमारे संवेदनात्मक अवगाहन में एक बड़ी कविता की अकृत्रिम आकारात्मक प्रतिमूर्ति निर्मित कर लेता है ।

उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जनपद के चक्रेश जैन "आकर्षण इण्टरप्राइजेज" के नाम से अपना लघु उद्योग चलाते हैं एवं न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी इनके द्वारा निर्मित वस्तुओं की काफी मांग है। चक्रेश जैन को अपनी विशिष्ट हस्त शिल्प कला के लिए वर्ष 1998 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'उत्तर प्रदेश रत्न', 2007 में 'लिम्का बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड' एवं 2012 में 'उत्तर प्रदेश दक्षता हस्त शिल्प पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

# नवउदारवाद, बाजारवाद और अवसरवादी राजनीति ने हिन्दी को बहुत पीछे धकेल दिया है – डॉ. वैदिक

- **कार्यक्रम विषयः** हिन्दी मीडिया से वर्तमान एवं भविष्य को उम्मीदें तथा हिन्दी सेवी सम्मान
- **दिनांकः** 17 नवम्बर 2012 • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित अतिथिः** डॉ. वेदप्रताप वैदिक, श्री उदयप्रताप सिंह
- **विशिष्ट अतिथिः** शब्दम सलाहकार मंडल के सदस्य – श्री उमाशंकर शर्मा, श्री मंजर उलवासै, डॉ. ओ.पी. सिंह, डॉ. महेश आलोक, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डॉ. रजनी यादव, श्री मुकेश मणिकान्चन एवं श्री बालकृष्ण गुप्त, श्री अंशुमान बावरी, डा. सुशीला त्यागी, डॉ. नरेन्द्र प्रकाश जैन, डॉ. ए.बी. चौबे।

शब्दम् का आठवां स्थापना दिवस पूर्णतः हिन्दी विमर्श को समर्पित था। इस अवसर पर संस्था द्वारा हिन्दी के अग्रणी पैरोकार डा. वेदप्रताप वैदिक और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह का उनकी हिन्दी सेवा के लिए सम्मान किया गया। यह कार्यक्रम अदभुत और अनूठा इसलिए भी बन गया, क्योंकि 'शब्दम्' साहित्य को समर्पित संस्था है। संस्था की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने जब पॉवर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन के जरिए संस्था के कार्यों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया तो हिन्द लैम्प्स संस्कृति भवन में उपस्थित बुद्धिजीवियों ने करतल ध्वनि से उसकी सराहना की। विगत वर्षों में संस्था द्वारा किए गए कार्यों में, चाहे वह ग्रामीण कवि सम्मेलन के जरिए हिन्दी की अलख जगाने का कार्यक्रम हो या पर्यावरण जागरूकता का; हिन्दी

श्री उदयप्रताप सिंह व श्री वेदप्रताप वैदिक को सम्मान पत्र भेंट करते बांये से डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डॉ. ओ.पी. सिंह, श्रीमती किरण बजाज, श्री मुकेश मणिकान्चन, डॉ. महेश आलोक, श्री उमाशंकर शर्मा, डॉ. रजनी यादव

वर्ष भर की गतिविधियों को पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत करतीं श्रीमती किरण बजाज

श्री उदय प्रताप सिंह की कविताओं का आनंद लेते श्री वेदप्रताप वैदिक व श्रीमती किरण बजाज

सेवियों के सम्मान की श्रृंखला हो या म्यूजिक कंसर्ट के कार्यक्रम, सभी कार्यक्रम समाज सेवा के यज्ञ में एक से बढ़कर एक आहुति के समान दिखाई दे रहे थे। पॉवर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन के चित्रों की जीवन्तता ने सभी दर्शकों का मनमोह लिया। श्रीमती किरण बजाज ने इस प्रस्तुति के जरिए यह तो साबित कर ही दिया कि शब्दम् संस्था हर वर्ष नए प्रतिमान गढ़ रही है, जिनका लाभ न केवल फिरोजाबाद अंचल अपितु पूरे आगरा संभाग को मिल रहा है। सुरूचिपूर्ण प्रबन्धन और कर्मठ कार्यकर्ताओं की सक्रियता के चलते पर्यावरणीय प्रदूषण के साथ ही सांस्कृतिक प्रदूषण को दूर करने में संस्था का प्रयास श्लाघनीय है।

अपने सम्मान से अभिभूत जब डा. वेदप्रताप वैदिक हिन्दी विमर्श पर बोलने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने उदयप्रतापजी को सम्बोधित करते हुए कहा ''मेरे जीवन की इस अविस्मरणीय सभा के अध्यक्षजी, मुझे आज यहाँ आकर बेहद प्रसन्नता हो रही है।'' दरअसल 'शब्दम्' का हिन्दी भाषा से बेहद लगाव है यही कारण है कि 2012 के शिक्षक दिवस पर सम्मानित होने वाले प्रो. नामवर सिंह भी गदगद हो गए थे।

अपने उद्‌बोधन के प्रारंभ में ही डा. वैदिक ने स्पष्ट कर दिया था कि वह केवल हिन्दी भाषा की स्थिति पर ही विमर्श को केन्द्रित करने का प्रयास करेंगे और बाद में उन्होंने किया भी यही। वैदिकजी इस बात को लेकर बेहद आहत दिखे कि देश में चहुंओर अंग्रेजी का बोलबाला है। हिन्दी के प्रति दिलचस्पी न तो राजनेताओं में है और न उद्योगपतियों में। अंग्रेजी के आगे सम्पूर्ण भारतीय समाज भृत्य बनकर रह गया है। ''अंग्रेजी के ऐसे घटाटोप में शब्दम् संस्था का हिन्दी प्रेम देखकर मुझे लगा जैसे शिकोहाबाद में कोई दाराशिकोह की तरह दीप जलाए बैठा है।'' देश के बुद्धिजीवियों का एक वर्ग अंग्रेजी सीखने को 'पांडित्य' समझता है। अंग्रेजी का ऐसा घटाटोप ब्रिटिश हुकूमत के दौरान भी देखने को नहीं मिला।

डा. वैदिक ने बताया कि वह पहले विद्यार्थी थ जो हिन्दी में शोधग्रन्थ लिखकर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर सके। प्रारंभ में उनके शोध को स्वीकार नहीं किया गया। नवउदारवाद, बाजारवाद और अवसरवादी राजनीति ने हिन्दी को बहुत पीछे धकेल दिया है। महात्मा गांधी और डा. राम मनोहर लोहिया के बाद कोई ऐसा राजनेता सामने नहीं आया है जो हिन्दी के लिए

श्री उदयपताप सिंह का शॉल भेंटकर सम्मानित करतीं
श्रीमती किरण बजाज

श्री वेदप्रताप वैदिक का शॉल भेंटकर सम्मानित करतीं
श्रीमती किरण बजाज

संघर्ष कर सके। डॉ. वैदिक ने स्पष्ट किया कि वह अंग्रेजी विरोधी नहीं हैं। उनकी कई पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी गयी हैं तथा वह विदेशों में अंग्रेजी में व्याख्यान देते हैं, लेकिन जिस तरह अंग्रेजी भारतवासियों पर थोपी जा रही है उसका वह विरोध करते हैं। उनका मानना है कि इस अंग्रेजी की वर्चस्वता के चलते देश में साठ करोड़ लोग बीस रू. से कम खर्च पर प्रतिदिन गुजारा करते हुए पशुवत जीवन जीने को विवश हैं। सेना का यह हाल है कि वहाँ बहादुरी से गोलियां चलाने वाले का सम्मान नहीं होता, बल्कि अंग्रेजी में जुबान चलाने वाले का सम्मान किया जाता है। देश के अनुसंधान पर भाषा के माध्यम का असर पड़ रहा है। भारतीय प्रतिभाएं अपनी प्रतिभा का उपयोग पहले अंग्रेजी सीखने में करती हैं उसके बाद ही अनुसंधान की ओर बढ़ पाती हैं। अंग्रेजी के तिलिस्म के चलते गरीब भारतवासी का बच्चा आगे नहीं बढ़ पाता। उन्होंने भारतवासियों के अंग्रेजी प्रेम पर कटाक्ष करते हुए कहा कि जो बच्चा अपनी मां (हिन्दी) को मां कहने में संकोच करता है वह मौसी (अंग्रेजी) की क्या इज्जत करेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उदयप्रतापजी को इंगित करते हुए वैदिकजी ने कहा कि आप हिन्दी संस्थान के जरिए ज्ञान–विज्ञान की श्रेष्ठ किताबों के हिन्दी अनुवाद का काम करवाइए ताकि छात्र–छात्राओं को लाभ मिल सके। अनुवाद के जरिए आप बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

उद्‌बोधन के अंत में डा. वैदिक ने श्रोताओं द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान भी किया।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह ने आश्वासन दिया कि वह हिन्दी संस्थान में रहते हुए हिन्दी के प्रचार–प्रसार और संवर्द्धन का काम करेंगे। उदयप्रताप ने डा. वैदिक से सम्बन्धित कुछ रोचक संस्मरण भी सुनाए जिनका श्रोताओं ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। संस्था की अध्यक्ष किरण बजाज के आग्रह पर उन्होंने अपनी गज़ल के कुछ शेर सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में डा. ओ.पी. सिंह एवं डॉ. महेश आलोक ने क्रमशः डा. वेद प्रताप वैदिक एवं श्री उदय प्रताप सिंह के व्यक्तिव और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

## डॉ. वेद प्रताप वैदिक

डॉ० वेदप्रताप वैदिक जन्म 30 दिसम्बर 1944 को इंदौर में हुआ। भारतवर्ष के वरिष्ठ पत्रकार, राजनैतिक विश्लेषक, पटु वक्ता एवं हिन्दी प्रेमी हैं। दर्शन और राजनीति उनके मुख्य विषय थे। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में पीएचडी किया। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विशेषज्ञों में उनका स्थान महत्वपूर्ण है। वे रूसी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत व हिन्दी सहित अनेक भारतीय भाषाओं के विद्वान हैं। वैदिकजी अपने मौलिक चिन्तन और प्रभावशाली वक्तृत्व के लिये जाने जाते हैं।

वैदिकजी अनेक भारतीय व विदेशी शोध–संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में 'विजिटिंग प्रोफेसर' रहे हैं। भारतीय विदेश नीति के चिन्तन और संचालन में उनकी भूमिका उल्लेखनीय है। अपने पूरे जीवनकाल में उन्होंने लगभग 80 देशों की यात्राएं की हैं।

अंग्रेजी पत्रकारिता के मुकाबले हिन्दी में बेहतर पत्रकारिता का युग आरम्भ करने वालों में डा. वैदिक का नाम अग्रणी है। डॉ. वैदिक हिन्दी को भारत और विश्व मंच पर स्थापित करने की दिशा में सदा प्रयत्नशील रहते हैं।

### प्रकाशित पुस्तकें

भारतीय विदेश नीति : नये दिशा संकेत (1971), अंग्रेजी हटाओ : क्यों और कैसे ? (1973), हिन्दी का सम्पूर्ण समाचार–पत्र कैसा हो ? (1994), अफगानिस्तान : कल, आज और कल (2002), वर्तमान भारत (2002), महाशक्ति भारत (2002 , एथनिक क्राइसिस इन श्रीलंका: इंडिया'ज ऑप्शंस'1985

### सम्पादनः

हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम संपादित ( 1976)

### पुरस्कार एवं सम्मान

काबुल विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान–1972, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गोविन्द वल्लभ पन्त पुरस्कार–1976, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'पुरुषोत्तम दास टण्डन' स्वर्ण पदक–1988, पत्रकारिता में 'श्रेष्ठ कला आचार्य' की उपाधि–1989, हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा पत्रकारिता के लिये सम्मान–1990, डॉ. राममनोहर लोहिया सम्मान – 1990, इण्डियन कल्चरल सोसायटी द्वारा 'लाला लाजपतराय सम्मान' – 1992, प्रधानमन्त्री द्वारा रामधारी सिंह दिनकर शिखर सम्मान– 1992

# सम्मान समाचार

शब्दम् के संस्थापक न्यासी , उपाध्यक्ष, पूर्व सांसद, समकालीन मंचीय कविता के वरिष्ठ एवं समर्थ कवि श्री उदय प्रताप सिंह को उत्तर प्रदेश सरकार ने ' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' का कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत किया है। इस पद को केबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त है। शब्दम् के न्यासी संस्थापक को इस महत्वपूर्ण पद पर आसीन देखकर हम गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं और आशा करते हैं कि श्री उदय प्रताप जी के निर्देशन में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान अपनी प्रतिष्ठा को पुनः अर्जित कर सकेगा तथा हिन्दी एवं भारतीय साहित्य के सर्जनात्मक साहित्य को नई संवादात्मक ऊँचाइयों पर प्रतिष्ठित कर सकेगा।

जज्बे से बनेगा ख्वाबों का प्रदेश

**जागरण फोरम में**
**शब्दम् अध्यक्ष श्रीमति किरण बजाज**

'...पीर की पगडंडियों पर चल सको तो आओ'

**युवा गीतकार,**
**शब्दम् के विशिष्ट सलाहकार**
**मुकेश मणिकांचन**
**साहित्यिक सेवाओं के लिए**
**जनपद गौरव से सम्मानित**

# शुभकामना संदेश

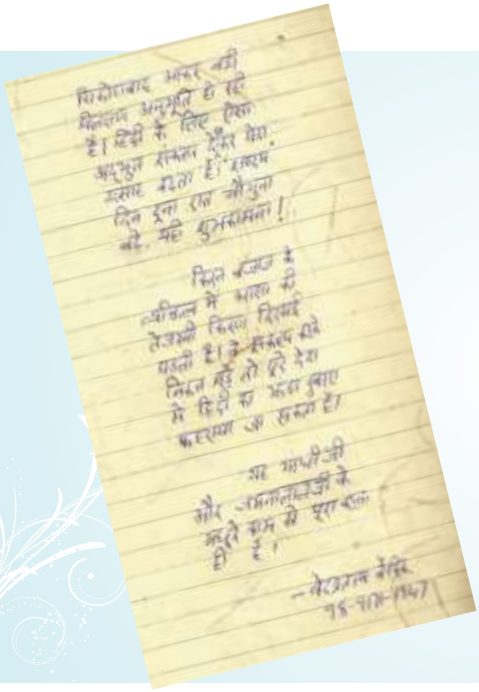

शिकोहाबाद आकर बड़ी विलक्षण अनुभूति हो रही है। हिन्दी के लिए ऐसा अदभुत संकल्प देखकर मेरा उत्साह बढ़ता है। 'शब्दम्' दिन दूना रात चौगुना बढ़े, यही शुभकामना!

किरण बजाज के व्यक्तित्व में आशा की तेजस्वी किरण दिखाई पड़ती है। वे संकल्प करके निकल पड़ें तो पूरे देश में हिन्दी का झण्डा दुबारा फहराया जा सकता है।

यह गाँधीजी और जमनालालजी के अधूरे काम को पूरा करना ही है।

–वेदप्रताप वैदिक

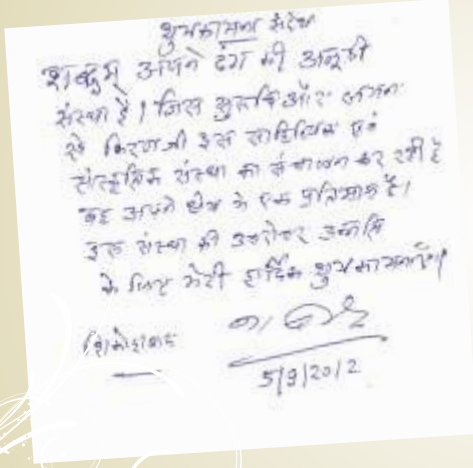

शब्दम् अपने ढंग की अनूठी संस्था है। जिस सुरूचि और लगन से किरणजी इस साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था का संचालन कर रही हैं, वह अपने क्षेत्र में एक प्रतिमान है।

इस संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए शुभकामनाएं।

–प्रो. नामवर सिंह

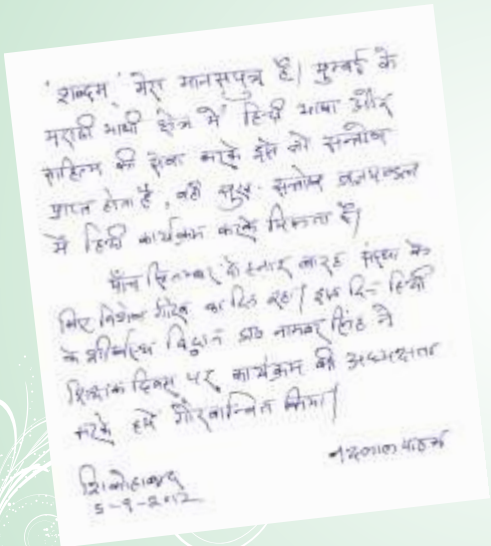

'शब्दम्' मेरा मानसपुत्र है। मुम्बई के मराठी भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा करके इसे जो सन्तोष प्राप्त होता है, वही सुख सन्तोष ब्रजमण्डल में हिन्दी कार्यक्रम करके मिलता है।

पाँच सितम्बर दो हजार बारह संस्था के लिए विशेष गौरव का दिन रहा। इस दिन हिन्दी के शीर्षस्थ विद्वान डा. नामवर सिंह ने शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करके हमें गौरवान्वित किया।

प्रो. नन्दलाल पाठक

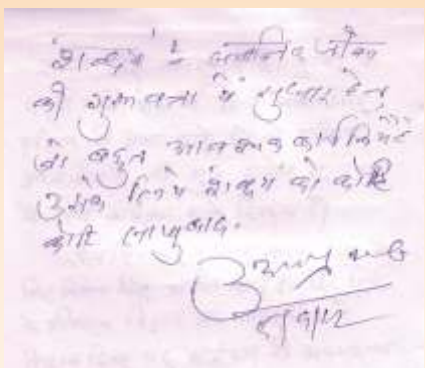

'शब्दम्' ने सामाजिक जीवन की गुणवत्ता में सुधार हेतु जो बहुत आवश्यक कार्य किए हैं उसके लिए शब्दम् को कोटि–कोटि साधुवाद।

श्री उदयप्रताप सिंह

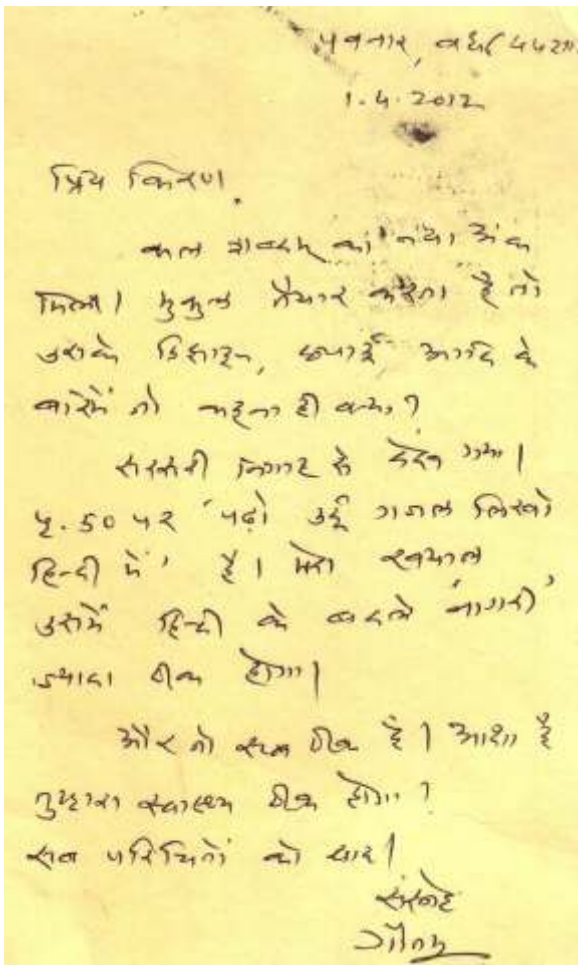

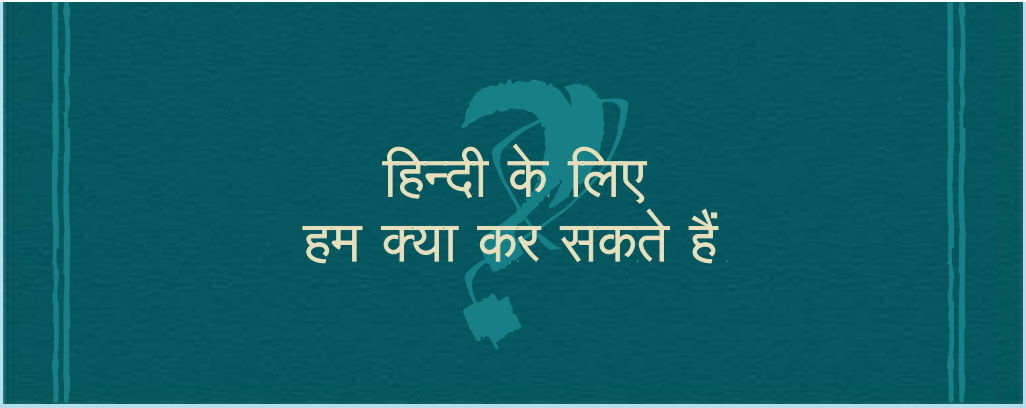


## हिन्दी के लिए हम क्या कर सकते हैं

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करें।
- अपने गाँव एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न गतिविधियों को प्रोत्साहन दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को उचित सम्मान दें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

## शुरुआत अपने घर से करें

- अपने परिवार में हिन्दी के ज्ञान को समृद्ध करें।
- बच्चों में हिन्दी के प्रति सम्मान और जिज्ञासा पैदा करें।
- बच्चों के विद्यालय की हिन्दी गतिविधियों में सहयोग दें।
- हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं और संस्थाओं से जुड़ें।

शब्दम् हिन्द लैम्प्स परिसर
शिकोहाबाद जिला फिरोजाबाद
उत्तर प्रदेश–205141
फोन न. 05676–234018, 2340501–503
फैक्स. 05676–234300
ई–मेल pmhoskb@gmail.com, pmhoskb@yahoo.com
वेबसाइट– www.shabdamhindi.com
ब्लॉग– www.shabdamsamachar.blogspot.in

सौजन्य:
बजाज
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
विश्वास की प्रेरणा